International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 14 Issue 5, September-October, 2026

माध्यमिक स्तर पर व्यावसायिक शिक्षा की प्रभावशीलता: राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. शिवेन्द्र सिंह चन्देल

असि. प्रो. (बी.एड.), राठ महाविद्यालय पैठाणी, पौड़ी गढ़वाल उत्तराखण्ड

सारांश

आज के समय में शिक्षा का उद्देश्य सिर्फ ज्ञान प्राप्त करना या प्रमाण-पत्र हासिल करना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों को जीवन, रोजगार और समाज की व्यावहारिक आवश्यकताओं के लिए तैयार करना भी है। तेजी से हो रहे तकनीकी बदलाव, रोजगार की लगातार बदलती प्रकृति, डिजिटल अर्थव्यवस्था, उद्यमिता तथा कौशल-आधारित कार्य संस्कृति ने विद्यालयी शिक्षा में व्यावसायिक शिक्षा की आवश्यकता को और अधिक महत्त्वपूर्ण बना दिया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने सामान्य एवं व्यावसायिक शिक्षा के बीच पारंपरिक विभाजन को कम करते हुए व्यावसायिक शिक्षा को मुख्यधारा की शिक्षा से एकीकृत करने पर विशेष महत्त्व दिया है। इस शोध-पत्र का उद्देश्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में माध्यमिक स्तर पर व्यावसायिक शिक्षा की प्रभावशीलता का विश्लेषण करना है। यह अध्ययन वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक प्रकृति का है तथा द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023, समग्र शिक्षा, राष्ट्रीय कौशल योग्यता रूपरेखा तथा एनसीईआरटी और पंडित सुंदरलाल शर्मा केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान से संबंधित दस्तावेजों का अध्ययन और विश्लेषण किया गया है। अध्ययन से इससे यह निष्कर्ष सामने आता है कि व्यावसायिक शिक्षा विद्यार्थियों में व्यावहारिक कौशल, रोजगारपरकता, उद्यमशीलता, आत्मनिर्भरता, समस्या-समाधान, डिजिटल दक्षता तथा श्रम की गरिमा विकसित करने की में पर्याप्त क्षमता है। ग्रामीण एवं पर्वतीय क्षेत्रों में इसे स्थानीय कृषि, बागवानी, पर्यटन, हस्तशिल्प, खाद्य प्रसंस्करण और डिजिटल सेवाओं से जोड़ना खास तौर पर उपयोगी हो सकता है। तथापि प्रशिक्षित शिक्षकों, आधारभूत सुविधाओं, उद्योग-विद्यालय सहयोग, सामाजिक स्वीकार्यता और प्रभावी करियर मार्गदर्शन की कमी इसके क्रियान्वयन की मुख्य चुनौतियाँ हैं।

मुख्य शब्द: व्यावसायिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, कौशल विकास, एनसीएफ-एसई 2023।

प्रस्तावना

किसी भी राष्ट्र के लिए शिक्षा के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक विकास का आधार है। शिक्षा व्यक्ति को ज्ञान देने के साथ-साथ उसमें ऐसी क्षमताओं, मूल्यों और कौशलों का विकास करती है जिनके माध्यम से वह समाज में समाज में सार्थक भूमिका निभा सके। 21वीं सदी में ज्ञान और कार्य की प्रकृति में तेजी से बदलाव आया है। सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, स्वचालन, डिजिटल अर्थव्यवस्था तथा वैश्वीकरण ने रोजगार के परंपरागत स्वरूप को प्रभावित किया है। इसके परिणामस्वरूप केवल सैद्धांतिक ज्ञान पर आधारित शिक्षा वर्तमान समय की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं मानी जा सकती।

भारतीय शिक्षा व्यवस्था की एक बड़ी चुनौती लंबे समय से सामान्य शिक्षा और व्यावसायिक शिक्षा के बीच दूरी बनी रही है। विद्यार्थियों एवं अभिभावकों में भी व्यावसायिक शिक्षा की तुलना में सामान्य अकादमिक शिक्षा को अधिक प्रतिष्ठित समझने की प्रवृत्ति देखने को मिलती रही है। इसका परिणाम यह हुआ कि शिक्षा प्राप्त करने के बाद भी अनेक युवाओं में कार्य-जगत के लिए आवश्यक व्यावहारिक दक्षताओं की कमी अनुभव की जाती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने इस समस्या को गंभीरता से स्वीकार करते हुए शिक्षा और कौशल के बीच बेहतर समन्वय स्थापित करने का प्रयास किया है। नीति व्यावसायिक शिक्षा को सामान्य शिक्षा से अलग अथवा कमतर धारा के रूप में देखने के बजाय समग्र शिक्षा का आवश्यक हिस्सा के रूप में प्रस्तुत करती है।

माध्यमिक स्तर इस दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण है। इस अवस्था में विद्यार्थियों की रुचियाँ अधिक स्पष्ट होने लगती हैं और वे उच्च शिक्षा, व्यवसाय तथा भविष्य के करियर के संबंध में निर्णय लेने की स्थिति में आ जाते हैं। इसलिए इस स्तर पर उपयुक्त व्यावसायिक शिक्षा विद्यार्थियों को अपनी क्षमताओं को पहचानने, व्यावहारिक दक्षताएँ विकसित करने तथा रोजगार एवं स्वरोजगार की संभावनाओं को समझने में सहायता कर सकती है।

व्यावसायिक शिक्षा की अवधारणा

व्यावसायिक शिक्षा से अर्थ ऐसी शिक्षा से है जो विद्यार्थियों को किसी व्यवसाय, कार्य-क्षेत्र अथवा आजीविका से संबंधित ज्ञान, कौशल, अभिवृत्ति एवं व्यावहारिक दक्षताएँ प्रदान करती है। इसका उद्देश्य केवल विद्यार्थी को किसी विशिष्ट नौकरी के लिए तैयार करना नहीं है, बल्कि उसमें कार्य-संस्कृति, समस्या-समाधान, संचार, सहयोग, तकनीकी दक्षता और उद्यमिता जैसी क्षमताओं का विकास करना भी है।

व्यावसायिक शिक्षा का आधार 'करके सीखना' (Learning by Doing) है। जब विद्यार्थी किसी कार्य को स्वयं करता है, उपकरणों का उपयोग करता है, परियोजना तैयार करता है, किसी कार्यस्थल का अवलोकन करता है अथवा किसी विशेषज्ञ से प्रशिक्षण प्राप्त करता है, तब अधिगम अधिक स्थायी और सार्थक बनता है।

आधुनिक व्यावसायिक शिक्षा में तकनीकी कौशल के साथ-साथ रोजगारपरक कौशल भी आवश्यक हैं। इनमें संचार कौशल , आत्म-प्रबंधन, सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी , उद्यमिता, पर्यावरणीय जागरूकता, टीमवर्क तथा समस्या-समाधान जैसी दक्षताएँ सम्मिलित हैं।

माध्यमिक स्तर पर व्यावसायिक शिक्षा की आवश्यकता

माध्यमिक स्तर पर व्यावसायिक शिक्षा की आवश्यकता कई कारणों से है। सर्वप्रथम , प्रत्येक विद्यार्थी की रुचि, योग्यता और सीखने की शैली अलग होती है। परंपरागत शिक्षा व्यवस्था में अकादमिक उपलब्धि को अत्यधिक महत्त्व दिए जाने के कारण व्यावहारिक , तकनीकी अथवा सृजनात्मक क्षमताओं वाले विद्यार्थी अपनी प्रतिभा का पूर्ण विकास नहीं कर पाते।

दूसरे, माध्यमिक शिक्षा के पश्चात कुछ विद्यार्थी उच्च शिक्षा की ओर जाते हैं जबकि कुछ आर्थिक , पारिवारिक अथवा व्यक्तिगत कारणों से कार्य-जगत में प्रवेश करते हैं। यदि उन्हें विद्यालय स्तर पर उपयोगी व्यावसायिक कौशल प्रदान किए जाएँ तो वे रोजगार अथवा स्वरोजगार के लिए अधिक तैयार हो सकते हैं।

तीसरे, कौशल-आधारित शिक्षा विद्यार्थियों को कार्य के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण प्रदान करती है। इससे शारीरिक श्रम और तकनीकी कार्यों के प्रति सम्मान विकसित होता है।

चौथे, व्यावसायिक शिक्षा स्थानीय आवश्यकताओं एवं संसाधनों से जुड़ी हो तो ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार और उद्यमिता को प्रोत्साहित किया जा सकता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में व्यावसायिक शिक्षा

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा में व्यावसायिक शिक्षा के विस्तार को महत्त्वपूर्ण सुधार के रूप में प्रस्तुत करती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति सामान्य एवं व्यावसायिक शिक्षा के बीच कठोर विभाजन समाप्त करने की दिशा में आगे बढ़ती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि विद्यार्थियों को विद्यालय स्तर से ही विभिन्न व्यवसायों एवं कार्यों का परिचय प्राप्त हो। स्थानीय विशेषज्ञों, कलाकारों, कारीगरों तथा अन्य कुशल व्यक्तियों के साथ सहभागिता के माध्यम से विद्यार्थी व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। NEP 2020 ने वर्ष 2025 तक विद्यालयी एवं उच्च शिक्षा प्रणाली में कम-से-कम 50 प्रतिशत

शिक्षार्थियों को व्यावसायिक शिक्षा का अनुभव प्रदान करने का लक्ष्य प्रस्तुत किया था। इस लक्ष्य का व्यापक अर्थ व्यावसायिक शिक्षा को सीमित धारा से निकालकर मुख्यधारा में स्थापित करना था। राष्ट्रीय शिक्षा नीति व्यावसायिक शिक्षा के माध्यम से श्रम की गरिमा अर्थात् Dignity of Labour विकसित करने पर भी बल देती है। विद्यार्थियों को यह समझना आवश्यक है कि प्रत्येक उपयोगी कार्य समाज और अर्थव्यवस्था के लिए महत्त्वपूर्ण है।

एनसीएफ-एसई 2023 और व्यावसायिक शिक्षा

विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023 ने NEP 2020 के उद्देश्यों को पाठ्यचर्या और शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में लागू करने की दिशा प्रदान की है। व्यावसायिक शिक्षा को विद्यालयी पाठ्यचर्या का महत्त्वपूर्ण अंग मानते हुए विद्यार्थियों में विभिन्न प्रकार के कार्यों की समझ, बुनियादी व्यावसायिक क्षमताओं और कार्य से संबंधित मूल्यों के विकास पर बल दिया गया है। इस दृष्टिकोण का महत्त्व यह है कि व्यावसायिक शिक्षा अब केवल नौकरी के लिए प्रशिक्षण नहीं रह जाती , बल्कि समग्र व्यक्तित्व विकास का माध्यम बनती है। विद्यार्थी कार्य की योजना बनाना , संसाधनों का उपयोग करना, समूह में कार्य करना, समस्याओं का समाधान करना और परिणामों का मूल्यांकन करना सीखते हैं। व्यावसायिक शिक्षा को विज्ञान, गणित, सामाजिक विज्ञान, कला तथा अन्य विषयों के ज्ञान से भी जोड़ा जा सकता है। इस तरह ज्ञान और कार्य का एकीकरण संभव होता है।

साहित्य समीक्षा
व्यावसायिक शिक्षा से संबंधित साहित्य का अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि शिक्षा एवं रोजगार के बीच समन्वय स्थापित करने के लिए कौशल-आधारित शिक्षा आवश्यक है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 व्यावसायिक शिक्षा को मुख्यधारा में लाने , विद्यालय स्तर से व्यावसायिक अनुभव प्रदान करने तथा सामान्य और व्यावसायिक शिक्षा के बीच विभाजन को कम करने पर बल देती है।

विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023 व्यावसायिक शिक्षा को समग्र पाठ्यचर्या का महत्त्वपूर्ण क्षेत्र मानती है। इसमें कार्य के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण, व्यावहारिक क्षमताओं तथा अनुभवात्मक अधिगम को प्राथमिकता दी गई है।

समग्र शिक्षा व्यावसायिक शिक्षा घटक में माध्यमिक और उच्च माध्यमिक स्तर पर NSQF-अनुरूप पाठ्यक्रमों के माध्यम से विद्यार्थियों को रोजगारपरक कौशल प्रदान करने की व्यवस्था की गई है।

पंडित सुंदरलाल शर्मा केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान द्वारा विकसित सामग्री व्यावसायिक शिक्षा में विद्यालय , समुदाय, उद्योग, शिक्षक एवं अन्य हितधारकों के बीच समन्वय की आवश्यकता पर बल देती है।

यूनेस्को तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा संबंधी दृष्टिकोण में TVET को रोजगार, सतत विकास, सामाजिक समावेशन और बदलती अर्थव्यवस्था की आवश्यकताओं से जोड़कर देखा गया है।

उपलब्ध साहित्य से यह भी स्पष्ट होता है कि केवल व्यावसायिक पाठ्यक्रम उपलब्ध करा देना पर्याप्त नहीं है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षक, आधुनिक संसाधन, वास्तविक कार्य-अनुभव और उद्योग के साथ सहयोग इसकी प्रभावशीलता के लिए आवश्यक हैं।

अध्ययन की आवश्यकता एवं औचित्य
NEP 2020 के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए यह समझना आवश्यक है कि माध्यमिक स्तर पर व्यावसायिक शिक्षा किस प्रकार विद्यार्थियों के समग्र विकास में योगदान दे सकती है।

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था के सामने एक चुनौती यह भी है कि विद्यार्थी परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करने के बावजूद वास्तविक जीवन की समस्याओं का समाधान करने और रोजगार संबंधी व्यावहारिक कार्यों में अपेक्षित दक्षता हमेशा विकसित नहीं कर पाते।

व्यावसायिक शिक्षा इस अंतराल को कम कर सकती है। इसके माध्यम से विद्यालयों को स्थानीय समाज, अर्थव्यवस्था, व्यवसाय और कार्य-जगत से जोड़ा जा सकता है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. माध्यमिक स्तर पर व्यावसायिक शिक्षा की अवधारणा एवं आवश्यकता का अध्ययन करना।
2. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में व्यावसायिक शिक्षा संबंधी प्रावधानों का विश्लेषण करना।
3. माध्यमिक स्तर पर व्यावसायिक शिक्षा की संभावित प्रभावशीलता का अध्ययन करना।
4. विद्यार्थियों के कौशल विकास और रोजगारपरकता में व्यावसायिक शिक्षा की भूमिका का विश्लेषण करना।
5. व्यावसायिक शिक्षा के प्रभावी क्रियान्वयन में आने वाली प्रमुख चुनौतियों की पहचान करना।

शोध-विधि

प्रस्तुत शोध वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रकृति का है। इसमें दस्तावेज-विश्लेषण पद्धति का प्रयोग किया गया है। अध्ययन के लिए द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023, समग्र शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा संबंधी एनसीईआरटी एवं पीएसएससीआईवीई सामग्री, सरकारी दस्तावेज, प्रतिवेदन तथा प्रासंगिक साहित्य का विश्लेषण किया गया।

माध्यमिक स्तर पर व्यावसायिक शिक्षा की प्रभावशीलता

10.1 व्यावहारिक कौशल का विकास
व्यावसायिक शिक्षा की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता यह है कि इसमें विद्यार्थी ज्ञान का व्यावहारिक प्रयोग सीखता है। उदाहरण के लिए कृषि संबंधी पाठ्यक्रम में केवल पौधों की वैज्ञानिक जानकारी देना पर्याप्त नहीं है; विद्यार्थी पौध तैयार करना, रोपण, सिंचाई, जैविक खाद और उत्पाद संरक्षण जैसी गतिविधियाँ करके सीख सकता है। इस तरह व्यावसायिक शिक्षा सैद्धांतिक और व्यावहारिक ज्ञान के बीच संबंध स्थापित करती है।

10.2 रोजगारपरकता का विकास
माध्यमिक स्तर पर व्यावसायिक शिक्षा विद्यार्थी को कार्य-जगत से प्रारंभिक परिचय कराती है। आईटी, कृषि, पर्यटन, स्वास्थ्य, खुदरा व्यापार, इलेक्ट्रॉनिक्स, मीडिया और अन्य क्षेत्रों से संबंधित प्रशिक्षण विद्यार्थियों को भविष्य के रोजगारों को समझने में सहायता कर सकता है। व्यावसायिक शिक्षा के साथ विकसित संचार, ICT, आत्म-प्रबंधन और उद्यमिता कौशल विद्यार्थी की रोजगारपरकता को और अधिक मजबूत बना सकते हैं।

10.3 आत्मविश्वास एवं आत्मनिर्भरता
जब विद्यार्थी अपने हाथों से किसी उपयोगी वस्तु का निर्माण करता है अथवा किसी समस्या का व्यावहारिक समाधान करता है, तो उसमें उपलब्धि का एहसास होता है। इससे उसका आत्मविश्वास बढ़ता है। व्यावसायिक कौशल व्यक्ति को केवल रोजगार प्राप्त करने में ही सहायता नहीं करते, बल्कि दैनिक जीवन की अनेक आवश्यकताओं को स्वयं पूरा करने में भी दक्ष बनाते हैं।

10.4 समस्या-समाधान क्षमता
व्यावसायिक गतिविधियों में विद्यार्थी वास्तविक समस्याओं का सामना करता है। किसी मशीन की समस्या पहचानना, पौधे की बीमारी का कारण समझना, ग्राहक की आवश्यकता के अनुसार सेवा प्रदान करना अथवा डिजिटल समस्या का समाधान करना आलोचनात्मक सोच और अपने अंदर समस्या-समाधान क्षमता को विकसित करता है।

समग्र शिक्षा के अंतर्गत व्यावसायिक शिक्षा
समग्र शिक्षा के अंतर्गत विद्यालयी व्यावसायिक शिक्षा को सामान्य अकादमिक शिक्षा के साथ एकीकृत करने की व्यवस्था की गई है। माध्यमिक स्तर पर NSQF-अनुरूप व्यावसायिक पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को विभिन्न Job Roles से परिचित कराने में सहायक हैं। व्यावसायिक पाठ्यक्रम में रोजगारपरक कौशलों का विशेष महत्त्व है। इनमें— संचार कौशल, आत्म-प्रबंधन कौशल, सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी कौशल, उद्यमिता कौशल तथा हरित कौशल सम्मिलित किए जाते हैं। ये कौशल किसी एक व्यवसाय तक सीमित नहीं होते, बल्कि लगभग सभी प्रकार के रोजगार एवं कार्यस्थलों में उपयोगी होते हैं।

डिजिटल प्रौद्योगिकी और व्यावसायिक शिक्षा
डिजिटल परिवर्तन ने व्यावसायिक शिक्षा के क्षेत्र में नई संभावनाएँ उत्पन्न की हैं। आज के समय में लगभग प्रत्येक व्यवसाय किसी न किसी रूप में डिजिटल तकनीक से जुड़ रहा है। विद्यार्थियों को कंप्यूटर का आधारभूत ज्ञान, इंटरनेट का सुरक्षित उपयोग, डिजिटल संचार, ऑनलाइन विपणन, ई-कॉमर्स, डेटा प्रबंधन और डिजिटल भुगतान जैसी क्षमताओं से परिचित कराया जाना चाहिए। ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों के लिए डिजिटल कौशल विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण हैं , क्योंकि इनके माध्यमसे भौगोलिक दूरी की बाधा को कुछ सीमा तक कम किया जा सकता है। स्थानीय उत्पादों को ऑनलाइन बाजार से जोड़ना भी उद्यमिता की संभावनाओं को बढ़ा सकता है।

व्यावसायिक शिक्षा के समक्ष प्रमुख चुनौतियाँ : व्यावसायिक शिक्षा को प्राप्त करने में विद्यार्थियों के सामने बहुत सारी समस्याएं भी आती हैं जिनका वर्णन इस प्रकार से है

1. प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी : व्यावसायिक विषयों को प्रभावी ढंग से पढ़ाने के लिए विषय-विशेषज्ञ और व्यावहारिक अनुभव वाले प्रशिक्षकों की आवश्यकता होती है। केवल सैद्धांतिक शिक्षण से व्यावसायिक शिक्षा का उद्देश्य पूरा नहीं हो सकता।

2. आधारभूत सुविधाओं का अभाव : प्रयोगशाला, कार्यशाला, उपकरण, इंटरनेट, कंप्यूटर और अन्य संसाधनों का अभाव व्यावसायिक शिक्षा की गुणवत्ता को प्रभावित कर सकता है।

3. उद्योग-विद्यालय समन्वय की कमी : व्यावसायिक शिक्षा का वास्तविक लाभ तभी मिलता है जब विद्यार्थी वास्तविक कार्यस्थल का अनुभव प्राप्त करे। इसके लिए विद्यालय और उद्योग अथवा स्थानीय कार्यस्थलों के बीच सहयोग आवश्यक है।

4. सामाजिक दृष्टिकोण : आज भी अनेक अभिभावक व्यावसायिक शिक्षा को अकादमिक शिक्षा की तुलना में कम प्रतिष्ठित विकल्प मानते हैं। इस कारण से अभिभावक अपने बच्चों को अकादमिक शिक्षा की ओर भेजते हैं। जिस कारण से व्यावसायिक शिक्षा अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर पा रही है। अभिभावको के इस मानसिकता में परिवर्तन आवश्यक है।

5. ग्रामीण एवं दूरस्थ क्षेत्रों की समस्या : दूरस्थ क्षेत्रों में उद्योगों और विशेषज्ञ प्रशिक्षकों की सीमित उपलब्धता के कारण On-the-Job Training और इंटर्नशिप जैसी गतिविधियों का आयोजन चुनौतीपूर्ण हो सकता है।

6. तेजी से बदलती तकनीक : आज का उपयोगी कौशल कुछ वर्षों में पुराना हो सकता है। इसलिए व्यावसायिक पाठ्यक्रमों की नियमित रूप से समीक्षा आवश्यक है।

7. करियर मार्गदर्शन का अभाव : विद्यार्थियों को केवल कौशल प्रशिक्षण देना पर्याप्त नहीं है। उन्हें उस कौशल से संबंधित उच्च शिक्षा, प्रमाणन, रोजगार, स्वरोजगार और उद्यमिता के अवसरों की जानकारी भी मिलनी चाहिए।

शिक्षक की भूमिका

NEP 2020 के संदर्भ में व्यावसायिक शिक्षा में शिक्षक की भूमिका परंपरागत ज्ञान-प्रदाता से आगे बढ़ती है। शिक्षक को Facilitator, Mentor और Guide की भूमिका निभानी होगी। उसे विद्यार्थी की रुचि पहचानने , उपयुक्त गतिविधियाँ आयोजित करने, स्थानीय विशेषज्ञों से संपर्क स्थापित करने और परियोजना आधारित अधिगम को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता होगी। शिक्षक को डिजिटल तकनीक एवं बदलते कार्य-जगत से भी परिचित रहना होगा। इसके लिए निरंतर व्यावसायिक विकास और प्रशिक्षण आवश्यक है।

विद्यालय एवं समुदाय की भूमिका

व्यावसायिक शिक्षा के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए विद्यालय को समुदाय से जोड़ना आवश्यक है। स्थानीय किसान , कारीगर, उद्यमी, तकनीशियन, पर्यटन व्यवसायी और अन्य विशेषज्ञ विद्यार्थियों के लिए महत्वपूर्ण अधिगम संसाधन बन सकते हैं। विद्यालय स्थानीय संसाधनों की पहचान करके Skill Mapping कर सकता है। इसके आधार पर विद्यार्थियों के लिए परियोजनाएँ , क्षेत्र भ्रमण और अल्पकालिक प्रशिक्षण आयोजित किए जा सकते हैं। इससे विद्यालय और समाज के बीच संबंध मजबूत होगा तथा विद्यार्थी स्थानीय ज्ञान और कौशल को सम्मान की दृष्टि से देखेंगे।

अध्ययन के प्रमुख निष्कर्ष

दस्तावेजों एवं उपलब्ध साहित्य के विश्लेषण के आधार पर निम्न निष्कर्ष प्राप्त होते हैं—

1. NEP 2020 ने व्यावसायिक शिक्षा को भारतीय विद्यालयी शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए महत्त्वपूर्ण नीतिगत आधार प्रदान किया है।
2. माध्यमिक स्तर पर व्यावसायिक शिक्षा विद्यार्थियों में व्यावहारिक कौशल विकसित करने की में पर्याप्त क्षमता है।
3. व्यावसायिक शिक्षा रोजगारपरकता के साथ-साथ उद्यमिता एवं स्वरोजगार की भावना विकसित कर सकती है।
4. व्यावसायिक शिक्षा के माध्यम से संचार, ICT, आत्म-प्रबंधन, समस्या-समाधान तथा हरित कौशल जैसी जीवनोपयोगी दक्षताओं का विकास संभव है।
5. व्यावसायिक शिक्षा श्रम के प्रति सम्मान और आत्मनिर्भरता की भावना विकसित करने में सहायक है।
6. इसकी प्रभावशीलता प्रशिक्षित शिक्षकों , पर्याप्त आधारभूत सुविधाओं, व्यावहारिक प्रशिक्षण और उद्योग/समुदाय के सहयोग पर निर्भर करती है।
7. प्रभावी करियर मार्गदर्शन एवं सामाजिक जागरूकता व्यावसायिक शिक्षा की स्वीकार्यता बढ़ाने के लिए आवश्यक है।

शैक्षिक निहितार्थ

व्यावसायिक शिक्षा के प्रभावी क्रियान्वयन से विद्यालयी शिक्षा के स्वरूप में महत्त्वपूर्ण बदलाव संभव है। विद्यालय केवल परीक्षा और प्रमाण-पत्र केंद्रित संस्था न रहकर ज्ञान एवं कौशल विकास केंद्र के रूप में विकसित हो सकता है। व्यावसायिक शिक्षा पाठ्यचर्या को वास्तविक जीवन से जोड़ती है। इससे विद्यार्थी यह समझ सकता है कि गणित , विज्ञान, भाषा और सामाजिक विज्ञान में अर्जित ज्ञान का व्यावहारिक उपयोग कहाँ और कैसे किया जाता है। यह विद्यार्थी-केंद्रित एवं गतिविधि-आधारित शिक्षण को भी बढ़ावा देती है। शिक्षक और विद्यार्थी के संबंध में परिवर्तन आता है तथा शिक्षक मार्गदर्शक और सह-अध्येता की भूमिका निभाता है।

निष्कर्ष

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा व्यवस्था को ज्ञान-केंद्रित प्रणाली से आगे बढ़ाकर ज्ञान , कौशल, मूल्य और व्यावहारिक दक्षताओं के समन्वित स्वरूप में विकसित करने की दिशा प्रदान करती है। इस दृष्टिकोण में व्यावसायिक शिक्षा का विशेष महत्त्व है। माध्यमिक स्तर पर व्यावसायिक शिक्षा विद्यार्थियों के लिए केवल किसी नौकरी का प्रशिक्षण नहीं है। यह उनके समग्र व्यक्तित्व , आत्मविश्वास, सृजनात्मकता, समस्या-समाधान क्षमता, उद्यमिता और आत्मनिर्भरता के विकास का माध्यम है। इसके द्वारा शिक्षा को वास्तविक जीवन और कार्य-जगत से जोड़ा जा सकता है। NEP 2020 और NCF-SE 2023 के संदर्भ में व्यावसायिक शिक्षा की अवधारणा शिक्षा और कार्य के बीच परंपरागत विभाजन को समाप्त करने की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण प्रयास है। यदि विद्यालयों में व्यावसायिक शिक्षा को पर्याप्त संसाधन, प्रशिक्षित शिक्षक, समुदाय का सहयोग, उद्योग से साझेदारी और प्रभावी करियर मार्गदर्शन प्राप्त हो तो इसकी प्रभावशीलता में उल्लेखनीय वृद्धि हो सकती है। कृषि, बागवानी, पर्यटन, आतिथ्य, स्थानीय हस्तशिल्प, खाद्य प्रसंस्करण, औषधीय पौधे और डिजिटल सेवाओं से संबंधित कौशल विद्यार्थियों को स्थानीय स्तर पर रोजगार एवं स्वरोजगार के अवसरों की पहचान करने में सहायता कर सकते हैं।

इसलिए कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर पर प्रभावी व्यावसायिक शिक्षा NEP 2020 के आत्मनिर्भर, कौशल-संपन्न, सृजनात्मक और रोजगारपरक युवा तैयार करने के उद्देश्य की प्राप्ति का एक महत्त्वपूर्ण माध्यम है। भविष्य की विद्यालयी शिक्षा में व्यावसायिक शिक्षा को किसी वैकल्पिक अथवा कम प्रतिष्ठित धारा के रूप में न देखकर समग्र और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के अनिवार्य घटक के रूप में स्वीकार करना आवश्यक है।

संदर्भ सूची

1. भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय। (2020)। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020। नई दिल्ली: भारत सरकार।
2. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद। (2023)। विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023। नई दिल्ली: एनसीईआरटी।
3. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद। (2024)। विद्यालयों में राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023 के क्रियान्वयन हेतु परामर्श। नई दिल्ली: एनसीईआरटी।
4. भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय। समग्र शिक्षा: विद्यालयी शिक्षा के लिए एकीकृत योजना। नई दिल्ली: शिक्षा मंत्रालय।
5. भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय। समग्र शिक्षा के अंतर्गत व्यावसायिक शिक्षा। नई दिल्ली: स्कूल शिक्षा एवं साक्षरता विभाग।
6. पंडित सुंदरलाल शर्मा केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं एनसीएफ-एसई 2023 के संदर्भ में व्यावसायिक शिक्षा के प्रमुख पदाधिकारियों के लिए पुस्तिका। भोपाल: पीएसएससीआईवीई।
7. पंडित सुंदरलाल शर्मा केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान। मध्य स्तर पर व्यावसायिक शिक्षा के क्रियान्वयन हेतु पुस्तिका। भोपाल: पीएसएससीआईवीई / एनसीईआरटी।
8. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद। विद्यालयी व्यावसायिक शिक्षा संबंधी शिक्षण-अधिगम सामग्री। नई दिल्ली: एनसीईआरटी।
9. भारत सरकार। (2009)।राष्ट्रीय कौशल विकास नीति। नई दिल्ली: भारत सरकार।
10. भारत सरकार, कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्रालय। (2015)। राष्ट्रीय कौशल विकास एवं उद्यमिता नीति। नई दिल्ली: भारत सरकार।
11. राष्ट्रीय कौशल विकास निगम। भारत में कौशल विकास एवं रोजगारपरकता संबंधी प्रतिवेदन। नई दिल्ली: एनएसडीसी।
12. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग। कौशल आधारित शिक्षा एवं व्यावसायिक पाठ्यक्रम संबंधी दिशा-निर्देश। नई दिल्ली: यूजीसी।
13. भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय। विद्यालयी शिक्षा में कौशल विकास एवं व्यावसायिक शिक्षा संबंधी दिशा-निर्देश। नई दिल्ली: भारत सरकार।
14. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद। व्यावसायिक शिक्षा: कार्य, कौशल और विद्यालयी पाठ्यचर्या का एकीकरण। नई दिल्ली: एनसीईआरटी।
15. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद। (2023)। व्यावसायिक शिक्षा। विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023। नई दिल्ली: एनसीईआरटी।
16. पंडित सुंदरलाल शर्मा केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान। व्यावसायिक शिक्षा में रोजगारपरक कौशल संबंधी पाठ्य सामग्री। भोपाल: पीएसएससीआईवीई।
17. भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय। विद्यालयी शिक्षा में राष्ट्रीय कौशल योग्यता रूपरेखा आधारित व्यावसायिक पाठ्यक्रम। नई दिल्ली: भारत सरकार।
18. भारत सरकार, कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्रालय। कौशल भारत मिशन: कौशल विकास एवं उद्यमिता संबंधी दस्तावेज। नई दिल्ली: भारत सरकार।
19. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद। अनुभवात्मक अधिगम, कौशल एवं कार्य आधारित शिक्षा संबंधी शैक्षिक सामग्री। नई दिल्ली: एनसीईआरटी।